[A-27] Seat No. _____ No. of printed pages : 01

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (HINDI) External (New) EXAMINATION
Thursday, 4th April 2019
10.00 a.m. to 1.00 p.m.
MAPEHIN401 : मध्यकालीन काव्य (भक्तिकाव्य, रीतिकाव्य)

कुल गुण : १००

प्र.१ **किन्हीं दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। (२०)

(क) कबीर गूंगा हूवा बावरा, बहरा हुआ कांनि।
पाऊँ थैं पंगुल भया, सतगुरि मार्‌या बांणि।।
कबीर पीछैं लागा जाइ था, लोक बेद के साथि।
आगै थैं सतगुर मिल्या दीपक दीया हाथि।।

(ख) बेद पुरान बिहाइ सुपंथ कुमारग कोटि कुचाल चली है।
काल कराल नृपाल कृपालन, राज समाज बड़ोई छली है।।
बनै-बिभाग न आस्रम-धर्म, दुनी दुख दोष दरिद्रदली है।
स्वारथ को परमारथ को कलि राम को नाम-प्रताप बली है।।

(ग) कागद पर लिखत न बनत कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तैरौ हियौ मेरे हिय की बात।।
जब जब वै सुधि कीजिए तब तब सब सुधि जाँहि।
आँखेनु आँखि लगी रहै, आँखें लागति नाँहि।।

(घ) मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं ठौर, फिरी दृग रावरे रूप की देही।।
एक बिसास की टेक गहै लगि आस रहै बसि प्रान-बटोही।
हौ घनआनंद जीवनमूल दई! कित प्यासनि मारत मोही।।

प्र.२ कबीर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (२०)

अथवा

प्र.२ निर्गुण काव्य-परंपरा में कबीर का स्थान निश्चित कीजिए।

प्र.३ भ्रमरगीत-परंपरा को स्पष्ट कीजिए। (२०)

अथवा

प्र.३ देव की काव्यगत विशेषताएँ समझाइए।

प्र.४ जायसी कृत 'पद्‌मावत' का परिचय दीजिए। (२०)

अथवा

प्र.४ पद्‌माकर की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

प्र.५ **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए- (२०)

(क) घनानंद का काव्य-परिचय
(ख) तुलसीदास का कृतित्व
(ग) सूर की काव्य भाषा
(घ) बिहारी का श्रृंगार-निरूपण